FIRST SUPPLEMENTARY DEMANDS FOR GRANTS FOR EXPENDITURE OF THE CENTRAL GOVERNMENT (EXCLUDING RAILWAYS) FOR THE YEAR 1977-78

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI SATISH AGARWAL): Sir, with your permission, on behalf of the Finance Minister, I beg to lay on the Table a statement (in English and Hindi) showing the First Supplementary Demands (December 1977) for Grants *for Expenditure of the Central Government* (excluding Railways) for the year 1977-78.

THE CONSTITUTION (AMENDMENT) BILL, 1974—Contd.

(*To amend Article* 312)

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति महोदय, इस विधेयक के पीछे जो भावना है, मैं उसका समर्थन करते हुए यह निवेदन करना चाहता हूं कि प्रजातांत्रिक व्यवस्था में, जहां चुने हुए लोग शासन करते हैं और उनके हाथ में शासन-सूत्र रहता है, वहां इस बात की सम्भावना ज्यादा रहती है, कि ऐसे लोग मंत्री बने, जिन्हें बहुत विस्तृत और विस्तार की जानकारी न हो।

[The Vice-Chairman (Shri U. K. Lakshmana Gowda) in the Chair]

यहां इस बात की भी सम्भावना रहती है कि उन्हें बहुत अनुभव भी न हो। नये व्यक्ति चुनकर आते हैं और मंत्री हो जाते हैं और उनको शासन-सूत्र सम्भालना पड़ता है। उनकी सहायता के लिये, उनको राय देने के लिये, उनके नीचे जो नौकरशाही होती है, उसको मंत्री की ईमानदारी से सहायता करनी चाहिए, उनकी जानकारी में सारी चीजें लानी चाहिए, ताकि वह जन-हित में अपना निर्णय ले सके।

श्रीमन्, मैं उदाहरण दे कर बताऊंगा कि यह आई०ए०एस० का काडर जो पहले आई० सी० एस० काडर हुआ करता था, कितना मजबूत होता है। और अपने तौर तरीकों में कितनी मनमानी करता है। मुझे याद है कि जिस समय द्वितीय महायुद्ध चल रहा था उस समय अमरीका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट और अमरीका की जनता इस बात का प्रयास कर रही थी कि अंग्रेजी सरकार इंडियन नेशनल कांग्रेस का सहयोग प्राप्त कर, गांधी जी की शर्तों को मान ले और किसी तरह हिन्दुस्तान की जनता का सहयोग अलाइस की फेवर में प्राप्त किया जाए। इसके लिए वे चाहते थे कि चर्चिल गांधी जी के साथ किसी प्रकार का सुलहनामा करें लेकिन चर्चिल यह कहा करते थे कि हिन्दुस्तान की समूची जनता हमारे साथ है, कांग्रेस के थोड़े से नेता जो प्रभावहीन हैं वही सिर्फ खिलाफत में थे। इस संदर्भ में हिन्दुस्तान से दो विशिष्ट महिलाएं हिन्दुस्तान से अमरीका गई थी श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित और श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय। उन्होंने अमरीकी जनता को भारतीय परिस्थितियों से और यहां की जन-भावना से अवगत कराने का प्रयास किया। इसके उपरांत चर्चिल साहब ने वायसराय को हिदायत दी कि यहां किसी को भेजा जाए ताकि इन भारतीय महिलाओं के विचारों को और प्रचार को कंट्रेडिक्ट किया जा सके। हिन्दुस्तान से वायसराय ने उस समय एक ऊंचे अफसर गिरिजाशंकर वाजपेयी को अमरीका भेजा और गिरिजाशंकर वाजपेयी ने वहां पब्लिक मीटिंग्स में हमारी इन आदरणीय महिलाओं के संबंध में गंदे शब्दों को इस्तेमाल किया जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता है। उन्होंने श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित को भ्रष्ट महिला तक कह डाला। उनकी बात हिन्दुस्तान के अखबारों में छपी और यहां सभी लोगों में इससे बहुत गुस्सा पैदा हुआ। पंडित जी जब यहां पर प्रधान मंत्री हुए तो उन्होंने पहला काम यह किया कि गिरिजाशंकर वाजपेयी को सैक्रेटरी जनरल बना दिया। इस पर जनता में काफी रोष हुआ कि गिरिजाशंकर वाजपेयी